

अस्थमा के मरीज भूलकर भी न करें इन चीजों का सेवन

परिवहन विशेष न्यूज

अस्थमा के पेशेंट यदि स्वास्थ्य के हिसाब से लाइफस्टाइल को मैनेज करते हैं और उसी हिसाब से डाइट लेते हैं, तो इसको काफी हद तक कंट्रोल किया जा सकता है। क्योंकि जरा सी लापरवाही के कारण इनकी जान मुश्किल में पड़ सकती है। अस्थमा यानि की दमा के मरीजों को अपनी डाइट का खास खयाल रखना पड़ता है। क्योंकि जरा सी लापरवाही के कारण इनकी जान मुश्किल में पड़ सकती है। आज के समय में न सिर्फ बुजुर्ग बल्कि युवा और कम उम्र के बच्चे भी अस्थमा की चपेट में आ रहे हैं। ऐसे में इन लोगों को सर्दियों या फिर पॉल्यूशन में ज्यादा समस्या होने लगती हैं। अस्थमा का मुख्य कारण बढ़ता प्रदूषण और कमजोर इम्युनिटी है।

हालांकि अस्थमा के पेशेंट यदि स्वास्थ्य के हिसाब से लाइफस्टाइल को मैनेज करते हैं और उसी हिसाब से डाइट लेते हैं, तो इसको काफी हद तक कंट्रोल किया जा सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि अस्थमा के पेशेंट को किस तरह की डाइट लेनी चाहिए और किन चीजों से परहेज करना चाहिए।

सर्दियों में बनाएं बाजरे की हेल्दी और टेस्टी रेसिपीज, बच्चों के साथ बड़े भी करेंगे आपकी तारीफ

अस्थमा के मरीज की डाइट दाल

बता दें कि दाल हमारे स्वास्थ्य के लिए काफी अच्छी मानी जाती है। क्योंकि दाल में भरपूर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। अस्थमा के मरीजों को सोयाबीन, काला चना, मूंग दाल और



अन्य दालों का सेवन करना चाहिए। इससे उनके फेफड़े मजबूत होते हैं। इसलिए इन्हें अपनी डाइट में एक कटोरी दाल जरूर शामिल करना चाहिए।

हरी सब्जियां

अस्थमा के पेशेंट को अपनी डाइट में हरी सब्जियां ज्यादा से ज्यादा शामिल करना चाहिए। हरी सब्जियों के सेवन से फेफड़ों में कफ नहीं जमा होता है और शरीर को सभी जरूरी पोषक तत्व और विटामिन्स मिलते हैं। वहीं इस तरह की डाइट लेने से अस्थमा अटक आने का खतरा काफी हद तक कम होता है।

विटामिन सी

अस्थमा के मरीज को अपनी डाइट में

विटामिन सी से भरपूर फूड्स जरूर शामिल करना चाहिए। विटामिन सी से भरपूर चीजों में एंटी ऑक्सिडेंट प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। जो फेफड़ों को सुरक्षित बनाने का काम करता है। साथ ही इससे अस्थमा अटक का खतरा भी काफी कम होता है।

तुलसी

तुलसी में कई तरह के औषधीय गुण पाए जाते हैं। साथ ही इसके सेवन से शरीर को एंटी ऑक्सीडेंट मिलता है। ऐसे में अस्थमा के मरीज योजना चाय में तुलसी के पते डालकर इसका सेवन कर सकते हैं। इसके सेवन से आपका इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। साथ ही सीजनल बीमारियों का खतरा भी कम होता है।

शहद दालचीनी

दमा के मरीजों के लिए दालचीनी और शहद का सेवन काफी फायदा पहुंचा सकता है। इसलिए रोजाना रात में सोने से पहले 2-3 चुटकी दालचीनी को शहद में मिलाकर इसका सेवन करने से फेफड़ों को आराम मिलता है।

इन चीजों से करें परहेज

वहीं कुछ चीजें ऐसी भी होती हैं, जिनसे अस्थमा के मरीजों की परेशानी बढ़ सकती है। इसलिए दमा के पेशेंट को अपनी डाइट में पीपता, केला, चीनी, गेहूं, अंडा, सोया, चावल और दही नहीं शामिल करना चाहिए। इसके अलावा ज्यादा तली-भुनी चीजों से भी परहेज करना चाहिए।

शादी की शेरवानी खरीदते वक्त जरूर रखें इन बातों का ध्यान, तभी मिलेगा परफेक्ट लुक

परिवहन विशेष न्यूज

हमने अक्सर शादी के घरों में देखा है कि लड़कियां तो शादी की तैयारी महीनों पहले से शुरू कर देती हैं, लेकिन लड़के अपनी शॉपिंग पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। जबकि शादी का दिन दूल्हा और दुल्हन दोनों के लिए ही बेहद खास होता है।

इस दिन हर किसी की नजर दुल्हन के साथ-साथ दूल्हे पर भी होती है। ऐसे में दूल्हे को भी सबसे खास दिखना चाहिए।

आज के समय में होने वाले दूल्हों को शेरवानी पहनना काफी पसंद आता है। बाजार में उनकी पसंद के हिसाब से आसानी से शेरवानी मिल भी जाती है। लेकिन कई बार ये देखा जाता है कि गलत तरह के वेडिंग आउटफिट का चयन करने के बाद रात भर पूजा के समय बैठना काफी मुश्किल हो जाता है।

दरअसल, शादी के दिन जयमाला का बाद रस्में पूरी रात चलती हैं। ऐसे में दूल्हे को वही कपड़े पहनने पड़ते हैं, जिन्हें पहनकर वो घोंड़ी चढ़े थे। ऐसे में अगर गलत आउटफिट का चयन हो, तो काफी मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है। इसी के चलते आज हम आपको दूल्हे के आउटफिट का चयन करने के कुछ टिप्स बताएंगे। वया पहन सकते हैं

अगर ज्यादा ठंड का मौसम है तो आप सूट को भी चुन सकते हैं, लेकिन शेरवानी शादी के दिन सबसे खास दिखती है। ऐसे में कोशिश करें कि अपनी शादी के दिन शेरवानी का ही चयन करें।

फैब्रिक का रखें ध्यान

अगर आप रेडीमेड शेरवानी खरीद रहे हैं तो उसे अच्छे से पहनकर देख लें। कई बार पायजामी का कपड़ा इतना ज्यादा कड़क होता है, कि उसे पहनकर बैठे रहना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में ध्यान रखें कि शेरवानी का फैब्रिक ऐसा हो जिसमें आपको उलझन ना होने पाए।

फिटिंग का रखें ध्यान

आपका शेरवानी ना तो ज्यादा टाइट होनी चाहिए और ना ही ढीली। अगर शेरवानी ज्यादा टाइट होगी तो इसे पहनकर बैठे रहना काफी मुश्किल होगा, लेकिन अगर ये ज्यादा ढीली होगी तो आपका लुक भी

बिगड़ सकता है। ऐसे में शेरवानी की फिटिंग एक दम परफेक्ट ही कराएं।

रंग का रखें ध्यान

वैसे तो आजकल पेट्रल रंग काफी ज्यादा चलन में है, लेकिन कई घरों में दूल्हा और दुल्हन को हल्के रंगों से दूर रखते हैं।

ऐसे में आप गोल्डन-सिल्वर, गोल्ड-ब्लैक, गोल्डन-औरेंज, रेड-गोल्डन रंगों को चुन सकते हैं।

अगर आपके घर पेट्रल पहनने में कोई दिक्कत नहीं है तो ये एक आइवरी रंग एक बेहतर विकल्प है।



पार्टनर की ये चार बातें प्यार का रिश्ता कर सकती है खराब, कहीं आप तो नहीं कर रहे ये गलतियां

परिवहन विशेष न्यूज

रिश्ता कोई भी हो, उसमें विश्वास की जरूरत होती ही है क्योंकि अगर दोनों लोग एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करेंगे, तो फिर रिश्ता टूट भी सकता है। बात अगर प्यार के रिश्ते की करें, तो इसमें एक पार्टनर दूसरे से यही उम्मीद रखता है कि वो उनके बारे में सोचे, उनका ध्यान रखे, उन्हें प्यार करे, उनकी बातें सुने आदि। पर इस बात की कोई गारंटी नहीं कि कौन सा रिश्ता बेहतर चलेगा और कौन सा रिश्ता कुछ पलों में ही टूट जाएगा। ऐसे में अगर आप भी चाहते हैं कि आपके प्यार का रिश्ता लंबा चले, तो इसके लिए जरूरी है कि आप कुछ बातों का ध्यान रखें। वरना पार्टनर की कुछ आदतें आपका रिश्ता खराब कर सकती हैं। तो बलिह जानते हैं ये कौन सी बातें हैं। आप अगली स्लाइड्स में इस बारे में जान सकते हैं...

किन कारणों से रिलेशनशिप टूट सकता है

इन आदतों के कारण टूट सकता है रिश्ता

मोबाइल चेक करना

अगर आपका पार्टनर आपका मोबाइल चोरी-छुपे चेक करता है, तो सावधान हो जाए क्योंकि ये एक गलत आदत है और हो सकता है उसे आप पर शक है। साथ ही पार्टनर अगर अपना मोबाइल आपको नहीं देखने देता है, तो ये आदत भी रिश्ते के लिए खराब हो सकती है।



किन कारणों से रिलेशनशिप टूट सकता है दोस्तों को लेकर गलत सोचना

हर किसी के कोई न कोई दोस्त होते हैं। ऐसे में लोग अपने इन दोस्तों संग समय बिताते हैं, उनके साथ घूमने जाते हैं, पार्टी करते हैं आदि। ऐसे में अगर आपका पार्टनर आपको दोस्तों से मिलने से मना करता है या उन्हें छोड़ने को कहता है, तो ये आदत आपके रिश्ते को खराब कर सकती है।

किन कारणों से रिलेशनशिप टूट सकता है

पैसे वापस न करना

जाहिर है कि एक पार्टनर दूसरे पार्टनर की पैसों की भी मदद करता ही है, लेकिन अगर आपका पार्टनर आपसे रोजाना पैसे मांगता है और फिर वापस भी नहीं करता है। तो ऐसे में आपको सोचने की जरूरत है, क्योंकि हो सकता है कि आपका पार्टनर आपके साथ सिर्फ पैसों के लिए हो।

किन कारणों से रिलेशनशिप टूट सकता है

शक करना

कई लोग ऐसे भी होते हैं जिनकी बेवजह शक करने की आदत होती है। इससे आपके रिश्ते में खटास आ जाती है। इसलिए ध्यान रहे कि अगर आपका पार्टनर हर एक छोटी बात को लेकर आप पर शक करता है, तो सावधान हो जाए। इस आदत से आपका रिश्ता टूट सकता है।

इस साल हैवी ज्वेलरी की जगह महिलाओं की पसंद बानें ऐसे गहने, आप भी डालें एक नजर

परिवहन विशेष न्यूज

दिसंबर का महीना चल रहा है। अब कुछ ही दिनों में साल खत्म हो जाएगा। हर साल की तरह इस साल के साथ भी लोगों की अच्छी और बुरी की यादें जुड़ी हैं। भले ही साल बदल जाता है, लेकिन वो अपनी छाप छोड़ जाता है। जिस तरह से साल बदलता है, ठीक उसी तरह साल बदलने के साथ-साथ फैशन भी बदलता रहता है। फैशन में भले ही कितना भी बदलाव हो जाए लेकिन गहनों के प्रति महिलाओं का प्यार कभी कम नहीं होता। महिलाएं किसी भी कार्यक्रम में खूबसूरत दिखने के लिए गहनों का इस्तेमाल करती हैं। समय के साथ-साथ ज्वेलरी के ट्रेंड में भी काफी बदलाव आया है।

अगर बात करें 2023 की, तो इस साल लड़कियों से लेकर महिलाओं तक ने हैवी ज्वेलरी को छोड़ सिंपल गहनों को अपने लिए पसंद किया। हम आपको इसी बारे में आज बताने जा रहे हैं, कि कैसे गहनों इस साल महिलाओं की पसंद बने रहे।

पर्ल ज्वेलरी

पहले के समय में लोग समाज को दिखाने के लिए हैवी ज्वेलरी पहनना पसंद करते थे, लेकिन अब वो अपने लुक के हिसाब से ही ज्वेलरी कैरी करते हैं। ऐसे में इस साल महिलाओं ने एथनिक से लेकर वेस्टर्न तक के



साथ पर्ल ज्वेलरी को ही चुना।

लेयर ज्वेलरी

बहुत सी महिलाओं को हैवी ज्वेलरी पसंद है, लेकिन उसका अब ज्यादा ट्रेंड नहीं है। ऐसे में ये लेयर ज्वेलरी ऐसी ही महिलाओं के लिए इस साल वरदान साबित हुई। इस साल महिलाओं ने इस तरह की लेयर ज्वेलरी को काफी पसंद किया।

डायमंड ज्वेलरी

हैवी ज्वेलरी को छोड़ अब लोगों का झुकाव डायमंड की तरफ जा रहा है। लोगों ने इस साल सगाई तक में सोने की हैवी रिंग बनवाने की बजाए इसी तरह की डायमंड अगूटियों को चुना है।

ईविल आई

इस साल लोगों को ऐसी ज्वेलरी काफी सुहाई, जिसमें ईविल आई यानी कि नजर से बचाने वाला ये स्टोन लगा हो। ये स्टोन आप मंगलसूत्र से लेकर किसी भी



ज्वेलरी में लगवा सकती हैं।

ऑक्सीडाइड ज्वेलरी

चाहे गले में कुछ पहनना हो या फिर कान में हैवी ईयररिंग डालने हों, ऑक्सीडाइड में आपको हर तरह की ज्वेलरी का विकल्प मिल जाता है। इसी के चलते इस साल महिलाओं में इसका काफी ज्यादा क्रेज रहा।

चांदी की पायल

अगर बात करें पायलों की तो एक समय था, जब भारी-भारी चांदी की पायल पहनने का क्रेज था लेकिन अब समय बदल गया है। अब इस साल लड़कियों के साथ-साथ महिलाओं तक को हल्की-हल्की चांदी की पायल पहनने का शौक है।



यूपी- फिरोजाबाद का नया नाम चंद्रनगर

● इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि दो साल पहले जिला पंचायत में फिरोजाबाद का नाम चंद्रनगर के नाम से पास होने के बाद अब नगर निगम में भी फिरोजाबाद का नाम चंद्रनगर करने पर हरी झंडी दे दी गई।

परिवहन विशेष न्यूज फिरोजाबाद नगर निगम से प्रस्ताव पास, योगी सरकार से भी मिली मंजूरी

फिरोजाबाद का नया नाम चंद्रनग होने जा रहा है। गुरुवार को हुई नगर निगम कार्य समिति में नाम परिवर्तन के प्रस्ताव को हरी झंडी मिल गई। प्रस्ताव को 12 में 11 सदस्यों का समर्थन मिला है। वहीं योगी सरकार से भी जिले का नाम बदलने को लेकर मंजूरी मिलने की खबर आ रही है। निगम कार्य समिति की बैठक गुरुवार को जीवामा हॉल में हुई। निर्धारित समय 11 बजे से करीब आधा घंटा देरी से शुरू

संक्षिप्त खबरें

वोटर चेतना महा अभियान मतदाता अभियान में मजोयोग से लगे कार्यकर्ता-अजीत रावत सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश संगठन की नेतृत्व के अनुसार भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा वोटर चेतना अभियान के अंतर्गत काशी क्षेत्र जनपद सोनभद्र में शुक्रवार को भाजपा जिला अध्यक्ष नंदलाल गुप्ता के निदेशानुसार ग्राम पंचायत जैतपुर संख्या 404 पर वाटर चेतना अभियान के बावजू 1 दिसंबर से 3 दिसंबर तक लगातार नए मतदाताओं को जोड़ने का काम चल रहा है।

इसी क्रम में विधानसभा घोरालव बृश संख्या 404 जैत गांव में पंचायत भवन पर बीएलओ के साथ मिलकर 10 नए मतदाता को जोड़ने का काम भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष सदर के ब्लॉक प्रमुख अजीत रावत द्वारा किया गया। मतदाता पुनरीक्षण अभियान के अंतर्गत 1 जनवरी 2024 को 18 वर्ष पूर्ण कर रहा है

ऐसे नवयुवकों को लगातार जोड़ने का काम भारतीय जनता पार्टी कर रही है। अनुसूचित मोर्चा के कार्यकर्ता पूरे काशी क्षेत्र में लगातार वोटरों को जोड़ रहे हैं।

काशी क्षेत्र के अनुसूचित मोर्चा के अध्यक्ष अजीत रावत ने बताया कि, जिस प्रकार से कार्यकर्ता धरातल पर जाकर नए मतदाताओं को जोड़ने का काम कर रहे हैं, 2024 में नरेंद्र मोदी को तीसरी प्रधानमंत्री बनाने का संकल्प कार्यकर्ताओं ने लिया है। इस कार्यक्रम में गौरीशंकर मंडल के अध्यक्ष राहुल सिंह पटेल, मंडल मंत्री मोहित सिंह, ग्राम प्रधान अमित कुमार, कनौजिया, आशा विश्वकर्मा, तारा देवी, संतोष भारती, अभिषेक कुमार, राजन कुमार, संजय पासवान आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे’

काशी के बंद 14 सिनेमाघरों का होगा कार्याकल्प, एक ही छत के नीचे मिलेगी पार्किंग-शॉपिंग की सुविधा

● कहा गया है कि बंद पड़े सिनेमाघरों को तोड़कर सिनेमाहाल सहित व्यवसायिक कॉलेक्स अन्य निर्माण की अनुमति दी जाए। स्थानीय स्तर पर जिलाधिकारी और वीडिए उपाध्यक्ष को सक्षम अधिकारी बनाया गया है।

परिवहन विशेष न्यूज वाराणसी

काशी के बंद चौदह सिनेमाघरों के दिन बहुरेंगे। कार्याकल्प होने से एक ही छत के नीचे सभी सुविधाएं मिलेंगी। इनमें प्राची, मजदा, साजन, लक्ष्मी, अभय, यमुना, शिल्पी, नटराज, छविहवल, मजदा, सुशील, कामाक्षी, आनंद, गंगा पैलेस सिनेमाघर शामिल हैं। जो कई वर्ष से बंद हैं। इस संबंध में शासन की ओर से पत्र जारी किया गया है। कहा गया है कि बंद पड़े सिनेमाघरों को तोड़कर सिनेमाहाल सहित व्यवसायिक कॉलेक्स अन्य निर्माण की अनुमति दी जाए। स्थानीय स्तर पर जिलाधिकारी और वीडिए उपाध्यक्ष को सक्षम अधिकारी बनाया गया है। जिनकी देखरेख में बंद सिनेमाघरों का कार्याकल्प होगा। सिनेमाघरों की जमीन का इस्तेमाल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, पार्किंग और अन्य कार्यों में किया जाएगा। घनी



हुई कार्यसमिति की बैठक में रखे गए 17 में से भवन कर संशोधन संबंधी एक प्रस्ताव खारिज हो गया। निगम कार्यकारिणी की बैठक में शहर के प्रमुख मुद्दों पर चर्चा कर प्रस्तावों को पास किया गया। इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि दो साल पहले जिला पंचायत में फिरोजाबाद का नाम चंद्रनगर के नाम से पास होने के बाद अब नगर निगम में भी फिरोजाबाद का नाम चंद्रनगर करने पर हरी झंडी दे दी गई। नाम परिवर्तन के विरोध में 12 में से कार्यकारिणी के एक सदस्य सपा के पार्षद रेहान ने विरोध किया। इसके साथ ही भवनों

के गृहकार का बोझ नहीं बढ़ाया जाएगा।

सभी कार्यकारिणी के सदस्यों ने इसे खारिज कर दिया। नामांतरण पर लगने वाले शुल्क में बढ़ोतरी के प्रस्ताव को समिति की मंजूरी मिल गई।

कार्य समिति की बैठक में स्वच्छ भारत मिशन के तहत शहर में बनने वाले टॉयलेट निर्माण की लागत, शहर की साफ-सफाई, अतिक्रमण संबंधी प्रकरणों पर सदन में बहस भी हुई। जिस पर नगर आयुक्त घनश्याम मीणा एवं उप सभापति श्याम सिंह यादव को हस्तक्षेप करना पड़ा। वहीं

कार्य समिति ने 15वें वित्त आयोग से होने वाले नवनिर्माण कार्यों से जुड़े प्रस्तावों को भी अपनी मंजूरी दे दी। हालांकि उप सभापति व अन्य सदस्यों ने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर पैनी नजर रखने एवं गड़बड़ी करने वाले ठेकेदारों पर सख्ती किए जाने की बात कही।

इन मुद्दों पर हुआ मंथन, मिला आश्वासन

- जलकल परिसर में रखीं महपुरुषों की प्रतिमाएं उपयुक्त जगह होगी स्थापित।
- वार्ड व मोहल्ला में स्थापित निष्प्रोजेक्ट हैडरूप हटाए जाएंगे।
- शहर में बाजारों, गली और मुख्य सड़कों पर व्यापन अतिक्रमण के विरुद्ध होगी सख्ती।
- 20 लाख रुपये तक की लागत वाले निर्माण कार्य टीएसी जांच से होंगे मुक्त।
- कोटला रोड, जलेसर रोड, गंज बाजार व अन्य जगहों पर आवासीय भवनों में बनीं दुकानों व प्रतिष्ठानों का होगा सर्वे।

शादीशुदा भाई अनुकंपा नियुक्ति का हकदार नहीं, पीएसी में तैनात ड्राइवर के भाई का दावा खारिज

● दलील थी कि विमला देवी के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बहन को भाई की अनुकंपा नियुक्ति का हकदार माना है

परिवहन विशेष न्यूज प्रयागराज

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अविवाहित मृतक कर्मचारी के शादीशुदा भाई को अनुकंपा नियुक्ति देने से इंकार कर दिया। कहा कि शादीशुदा भाई अविवाहित मृतक कर्मचारी का आश्रित होने का दावा नहीं कर सकता। यह फैसला न्यायमूर्ति अजीत कुमार अदालत ने याची संजय कुमार याचिका को खारिज करते हुए सुनाया। याची ने पीएसी गोरखपुर में ड्राइवर के पद पर तैनात रहे अपने मृतक अविवाहित भाई के स्थान पर अनुकंपा नियुक्ति के दावे को खारिज करने वाले आदेश को



चुनौती दी थी। याची के अधिवक्ता दिलीप कुमार श्रीवास्तव ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा विमला देवी के प्रकरण में स्थापित विधि व्यवस्था के आलोक में याची को अनुकंपा नियुक्ति देने की मांग की थी। दलील थी कि विमला देवी के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बहन को भाई की अनुकंपा नियुक्ति का हकदार माना है तो शादीशुदा भाई के साथ लैंगिक भेदभाव न कर उसे भी भाई की अनुकंपा नियुक्ति का

हकदार माना जाना चाहिए। कोर्ट ने याची के दावे को खारिज करते हुए कहा कि अविवाहित मृतक कर्मचारी का आश्रित केवल अविवाहित भाई, बहन, माता और पिता को ही माना जा सकता है। वर्तमान मामले में याची शादीशुदा होने के साथ ही मृतक कर्मचारी का बड़ा भाई है। इसलिए उसे मृतक भाई की अनुकंपा नियुक्ति का हकदार नहीं माना जा सकता।

बांसगांव सांसद और विधायक के खिलाफ ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन, गांव में लगाए पोस्टर

● पिछले पांच साल के दौरान क्षेत्र में ना तो सांसद निधि से कोई काम हुआ और ना ही विधायक ने जनता की समस्याओं का समाधान किया।

परिवहन विशेष न्यूज गोरखपुर

गांव में विकास कार्य नहीं होने से नाराज जगदीशपुर भलुवान के ग्रामीणों ने बांसगांव सांसद कमलेश पासवान और विधायक विमलेश पासवान के खिलाफ प्रदर्शन किया। साथ ही दोनों के गांव में प्रवेश पर प्रतिबंध संबंधी पोस्टर भी लगा दिए। बृहस्पतिवार शाम ग्रामीणों ने बांसगांव विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत गगहा क्षेत्र के जगदीशपुर भलुवान गांव में भाजपा विधायक



विमलेश पासवान और उनके भाई सांसद कमलेश पासवान के प्रवेश को प्रतिबंधित करने वाले पोस्टर को लेकर भगवान चौराहे पर प्रदर्शन किया। ग्रामीण हाथ में बकायदा टूटी सड़कों की तस्वीर वाले पोस्टर और फ्लैक्स लिए रहे। ग्रामीणों ने कहा कि जीतने के बाद से विधायक विमलेश पासवान और उनके भाई सांसद कमलेश

बहुजन समाज पार्टी की जिला स्तरीय बैठक आज

सोनभद्र। बहुजन समाज पार्टी जनपद सोनभद्र के बी0 सागर ने शुक्रवार को कहा कि, बहन कुमारी राष्ट्रीय अध्यक्ष बसपा पूर्व मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश पूर्व सांसद राज्यसभा के निर्देश पर लखनऊ चले कार्यक्रम के तहत परम पूजनीय बोधिसत्व डॉक्टर भीमराव अबेडकर के परिनिर्वाण दिवस 06 दिसम्बर 2023 को डा10 अंबेडकर स्मारक स्थल लखनऊ में आयोजन की तैयारी के लिए

बहुजन समाज पार्टी के तत्वावधान में जिला स्तरीय बैठक 02 अक्टूबर 2023 को समय दोपहर 12:00 बजे स्थान डा0 अंबेडकर भवन पुसौली में आयोजित किया गया है। जिसमें शिवबोध राम पूर्व एमएलसी एवं मुख्य मण्डल प्रभारी मिर्जापुर मंडल, गुड्डा राम साहब मुख्य मंडल प्रभारी मिर्जापुर मंडल, एड 0 शशिभूषण साहब मुख्य मण्डल प्रभारी मंडल प्रभारी का आगमन हो रहा है। इसमें मंडल जूनियर गण, मंडल प्रभारी गण, जिला कमेटी एवं विधानसभा कमेटी, बामसेफ, बीबीएफ कमेटी, पूर्व पदाधिकारी गण की उपस्थिति अनिवार्य है।

- जलकल विभाग में पार्षद कक्ष बनाने व रात्रिकालीन सुरक्षा पिकेट का आश्वासन।

- इन गड़बड़ियों पर तल्लख रहे पार्षदों के तेवर
- चनौरा खताघर से प्रतिदिन लाखों रुपये का कूड़ा चोरी का प्रकरण।
- स्मार्ट रोड निर्माण में मौरंग व बालू की जगह खपाई जा रही डस्ट।
- पार्षदों की सुनवाई नहीं करने वाले अफसरों-कर्मचारियों पर कार्यवाई की मांग।
- उपसभपति व क्षेत्रीय पार्षद द्वारा कहे जाने के बावजूद सुहागनगर से तहसील सदर तक टॉयलेट निर्माण नहीं कराए जाने।
- डोर टू डोर कूड़ा कलेक्शन को नामित संस्था के कार्यों की जांच को कमेटी बनाने की मांग।
- स्मार्ट रोड पर सीमेंट के साथ डस्ट इस्तेमाल की भी होगी जांच।

बीएचयू दीक्षांत समारोह में कॉलेजों के डिग्री का विवाद गहराया, पढ़े विरोध पर क्यों उतरे छात्र?

● इस फैसले को गेटमावपूर्ण बताते हुए एक दिसंबर को विरोध में केंद्रीय कार्यालय बंद कराने का निर्णय लिया है।

परिवहन विशेष न्यूज वाराणसी

बीएचयू में 16 दिसंबर को दीक्षांत समारोह में उपाधि वितरण को लेकर नया विवाद सामने आया है। इस बार विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और कॉलेजों के लिए अलग-अलग समारोह होंगे। ऐसा पहली बार होगा जब कॉलेजों के विद्यार्थियों को संकाय, संस्थान के विद्यार्थियों संग उपाधियां नहीं मिलेंगी। इसको लेकर विद्यार्थियों की नाराजगी बढ़ती जा रही है। इस फैसले को भेदभावपूर्ण

न्यायालय ने दुराचारियों को आजीवन कारावास व अर्थदण्ड से किया दण्डित

● पांच वर्ष का कारावास, तथा पांच हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया, अर्थदण्ड न अदा करने पर एक माह का अतिरिक्त कारावास होगा।

परिवहन विशेष न्यूज गाजीपुर

पुलिस मॉनिटरिंग सेल व अभियोजन द्वारा की गयी लगातार प्रभावी पैरवी के फलस्वरूप तीन अभियुक्तों को न्यायालय द्वारा दोषी करार देते हुए कारावास व अर्थदण्ड की सजा दी गयी। उल्लेखनीय है कि थाना कोतवाली सदर पर पंजीकृत पाक्सो एक्ट व दुराचार से सम्बन्धित प्रकरण में अभियुक्त दीपक बिन्द एवं गोपी पुत्र विजय बिन्द, सूरज बिन्द पुत्र मोती बिन्द तथा चन्दन बिन्द पुत्र रामविलास बिन्द समस्त निवासीजण ग्राम मीरनपुर सक्का थाना कोतवाली जनपद गाजीपुर के विरुद्ध लगातार किये गये प्रभावी पैरवी के फलस्वरूप अभियुक्तों



को धारा 363 भादवि में अभियुक्त दीपक बिन्द उर्फ गोपी एवं सूरज बिन्द को पांच वर्ष का कारावास, तथा पांच हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया, अर्थदण्ड न अदा करने पर एक माह का अतिरिक्त कारावास होगा। धारा 366 भादवि में अभियुक्त दीपक बिन्द उर्फ गोपी एवं सूरज बिन्द को सात वर्ष का कारावास तथा दस हजार रुपए के अर्थदण्ड से दण्डित

किया गया। अर्थदण्ड न अदा करने पर तीन माह का अतिरिक्त कारावास होगा। धारा 506 भादवि में समस्त अभिगण को एक वर्ष के कारावास से दण्डित किया गया। धारा 6 पाक्सो एक्ट में अभियुक्तों को आजीवन कारावास तथा 25000 रु. के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया। अर्थदण्ड न अदा करने पर एक वर्ष के अतिरिक्त कारावास से दण्डित किया गया।



बताते हुए एक दिसंबर को विरोध में केंद्रीय कार्यालय बंद कराने का निर्णय लिया है। इसमें विश्वविद्यालय के साथ ही कॉलेजों के छात्र भी शामिल होंगे। विश्वविद्यालय के 103वें दीक्षांत समारोह का मुख्य आयोजन स्वतंत्रता भवन में सुबह 9.30 बजे से होगा। इसके बाद

संकायों, संस्थानों में सर्वोच्च अंक पाने वाले मेधावी विद्यार्थियों को पदक, उपाधियां दी जानी है। इस बार समारोह में कॉलेजों के विद्यार्थियों को संकायों से अलग उपाधि देने का निर्णय लिया गया है। विश्वविद्यालय से जुड़े चार कॉलेजों को परिसर में चार अलग-अलग जगहों का चयन

शराब पीने का हुआ अफसोस तो युवक ने लगाई फांसी, पूरे शरीर पर परिजनों का नाम लिखकर मांगी माफी

● ग्रामीणों की सूचना पर मेहनाजपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से शव को नीचे उतारा गया।

परिवहन विशेष न्यूज आजमगढ़

मेहनाजपुर थाना क्षेत्र के ओहनी गांव में शुक्रवार की सुबह पेड़ पर लटका हुआ एक युवक का शव मिला। मृतक के पूरे शरीर पर परिजनों का नाम लिख कर माफी मांगी गई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पेड़ से उतरवा कर पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया।

ओहनी गांव के ग्रामीण शुक्रवार की सुबह सो कर उठे और गांव के सिवान की तरफ गए तो पेड़ पर एक



युवक की लाश लटकती देखा। ग्रामीणों की सूचना पर मेहनाजपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से शव को नीचे उतारा गया। मृतक की पहचान मनोज राजभर 35 निवासी लहुवा बसहीकला के रूप में की गई।

मृतक अपने पूरे शरीर पर पत्नी व बच्चों का नाम लिखा हुआ था। इसके साथ ही उसने यह भी

लिखा था कि वह अत्यधिक शराब पीता है।

जिसके चलते परिवार हमेशा परेशान रहता है। वह अपने पत्नी व बच्चों से इसके लिए माफी भी लिख कर मांगा हुआ है।

परिजानों को घटना की सूचना देने के साथ ही पुलिस ने पंचनामा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया है।

क्या मथुरा है बीजेपी का अगला एजेंडा, आखिर केशव प्रसाद मौर्य इस मुद्दे को बार-बार क्यों उठा रहे

● पार्टी के कुछ नेताओं का मानना है कि आम चुनावों के बाद कृष्ण जन्मभूमि पर मंदिर के निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर आंदोलन हो सकता है क्योंकि यह लोकाचार और पार्टी कैडर के भावनाओं से मेल खाता है।

परिवहन विशेष न्यूज

लोकसभा चुनाव से पहले मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि एक बार फिर से सुर्खियों में आता दिख रहा है। इसको लेकर उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव पर वार कर रहे हैं। भाजपा का साफ तौर पर कहना है कि यह मुद्दा संसदीय चुनावों से पहले उसके एजेंडे में नहीं है।

पार्टी के कुछ नेताओं का मानना है कि आम चुनावों के बाद कृष्ण जन्मभूमि पर मंदिर के निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर आंदोलन हो सकता है क्योंकि यह लोकाचार और पार्टी कैडर के भावनाओं से मेल खाता है।

मिल रहा संकेत

2021 के यूपी विधानसभा



चुनावों से पहले, जब अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण पहले से ही चल रहा है, मौर्य ने यह कहकर विवाद खड़ा कर दिया था कि मथुरा में एक मंदिर भाजपा के एजेंडे में अगला है। इस बार उन्होंने यादव रूख स्पष्ट करें। यह पोस्ट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भगवान कृष्ण की जन्मस्थली मानी जाने वाली मथुरा यात्रा की पृष्ठभूमि में आया है, जहां उन्होंने कहा था, मथुरा और ब्रज भी विकास की दौड़ में पीछे नहीं रहेंगे। वह दिन दूर नहीं जब भगवान को ब्रज क्षेत्र में और भी अधिक दिव्यता के साथ देखा जाएगा।

केशव प्रसाद मौर्य का ट्वीट

एक एक्स पोस्ट के जरिए केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि अल्पसंख्यकों के वोट की खातिर अपने हिंदुओं का खून बहाने वाली सपा भगवान

श्रीकृष्ण के वंशजों का वोट चाहती है, परंतु श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर मंदिर नहीं चाहती। सपा बहादुर श्री अखिलेश यादव इस मामले में अगर श्री आजम खान और उनके समाज के दबाव में नहीं है तो अपना रूख स्पष्ट करें। यह पोस्ट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भगवान कृष्ण की जन्मस्थली मानी जाने वाली मथुरा यात्रा की पृष्ठभूमि में आया है, जहां उन्होंने कहा था, मथुरा और ब्रज भी विकास की दौड़ में पीछे नहीं रहेंगे। वह दिन दूर नहीं जब भगवान को ब्रज क्षेत्र में और भी अधिक दिव्यता के साथ देखा जाएगा।

मोहन मागवत का रूख

भागवत से जब पूछा गया कि क्या उनका संगठन वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद विवाद और मथुरा में शाही इंदगाह-कृष्ण जन्मभूमि विवाद को उठाएगा। तब उन्होंने कहा था कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण संघ इस आन्दोलन (अयोध्या) से एक संगठन के रूप में जुड़ा। यह एक अपवाद है। अब हम फिर से मानव विकास से जुड़ेंगे और यह आंदोलन हमारे लिए चिंता का विषय नहीं रहेगा।

मथुरा विवाद अदालतों में लंबित

उत्तर प्रदेश के एक अन्य भाजपा नेता ने कहा, यह पार्टी की आधिकारिक लाइन नहीं है लेकिन वह के डर के लोकाचार और भावनाओं से मेल खाती है। उन्होंने कहा कि एक बार यह मुद्दा सामने आने पर उत्तर प्रदेश में राजनीतिक परिदृश्य में भारी बदलाव आ सकता है क्योंकि इसका असर सपा के मुस्लिम-यादव मूल समर्थन आधार पर पड़ सकता है।

मथुरा विवाद विभिन्न अदालतों में लंबित है। वकील महेंद्र प्रताप सिंह और राजेंद्र माहेश्वरी ने स्थानीय अदालत में दावर याचिका में दावा किया है कि मुगल बादशाह औरंगजेब ने प्राचीन केशवदेव मंदिर को ध्वस्त कर उसकी जगह इंदगाह का निर्माण कराया था।



सिलक्यारा सुरंग की घटना

17 दिन तक संकटकालीन स्थितियों में मजदूरों को जीवित रखने की चुनौती वाकई बहुत बड़ी थी, जिस पर पूरी दुनिया की नजरें लगी थीं। मजदूरों तक ऑक्सीजन और भोजन पानी पहुंचाना भी आसान नहीं था। तरह-तरह की बाधाओं एवं तकलीफों के बीच जिन्दगी बचाने की मुहिम निश्चित ही एक रोशनी बनी। इसमें सुरंग में फंसे मजबूरों ने जहां हर तरह से जिजीविषा एवं बहादुरी का परिचय दिया, वहीं बचाव कार्य में जुटे वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों, तकनीकी जानकारों एवं कर्मियों ने दिन-रात एक करके एक उदाहरण प्रस्तुत किया। यह बचाव अभियान एवं इसकी सफलता ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय उदाहरण बनकर प्रस्तुत हुआ है। दुविधा एवं मौत की सुरंग में कैद हुए मजदूरों को संकेत से आजादी मिली, लेकिन सिलक्यारा की इस घटना ने अनेक सवाल भी खड़े किए हैं। सवाल यह है कि एक प्लान के विफल होने पर दूसरा और आगे के विफल होने पर ही तीसरा, चौथा, पांचवां प्लान क्यों बना? क्या पांच प्लान पहले ही तैयार नहीं हो सकते थे? बीते दो दशकों में राष्ट्रीय राजमार्गों पर सड़क-क्रांति ने विकास की नई इबारत लिखी है, चारधाम सड़क परियोजना, पहाड़ी क्षेत्रों एवं दुर्गम्य स्थलों में भी यातायात सुगम करने के लिए पहाड़ खोदकर टनल बनाए जा रहे हैं, जिनमें दुर्घटनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। प्रश्न है कि संभावित दुर्घटनाओं से बचने के आवश्यक उपकरण क्यों नहीं जुटाये गये? मलबा हटाने के लिए अमेरिका से क्यों मशीन मंगानी पड़ी, भारत में ऐसी मशीनों की उपलब्धता क्यों नहीं है? ऐसी विपत्तियों एवं संकटों से उबरने की हमारी तैयारी आत्म-निर्भर एवं स्वावलम्बी क्यों नहीं बनायी जाती? क्यों नहीं अपने देश में जगह-जगह बढ़ती सुरंग परियोजना को देखते हुए एक ऐसे राष्ट्रीय संस्थान खड़ा किया जाता जो बिना भ्रष्टाचार एवं कोताही में लिप्त हुए निर्माणधीन परियोजनाओं का हर वर्ष तकनीकी ऑडिट करे, जैसा कि सरकारी संस्थानों में वित्तीय ऑडिट होता है। तब हम ऐसे हादसों को रोक पाएंगे। हिमालय जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में ऐसी बड़ी सड़क परियोजनाओं एवं अन्य निर्माण कार्यों की इजाजत देने से पहले उस पर व्यापक मंथन-अनुसंधान-जांच एवं शोध की अपेक्षा है। किस तरह के निर्माण कार्यों की इजाजत दी जाए और किस तरह के काम को नहीं, यह भी समझना एवं एक रोडमैप बनाना होगा। पर्यावरणविद और भूविज्ञानी ऐसे निर्माण कार्यों को पर्यावरण के लिये गंभीर खतरा मानते रहे हैं, ऐसा लोग लंबे समय से कहते आ रहे हैं कि हिमालय एक कच्चा पहाड़ है, वहां बड़ी परियोजनाओं को अनुमति देने से पहले सब तरह की जांच कर लेनी चाहिए। संभावित खतरों पर संवेदनशीलता से चिन्तन करना चाहिए। उत्तरकाशी के सिलक्यारा में बन रही सुरंग में भी यह बात सामने आई है कि इस जगह के आसपास दो स्थानीय फॉल्टों की उत्तर से दक्षिण तक कटान है। क्या इस सुरंग को बनाने से पहले इसका अध्ययन नहीं किया गया था? बचाव कार्य के लिए यहां आए विदेशी सुरंग विशेषज्ञों ने शेयर जोन की बात कही। शेयर जोन उसे कहते हैं, जिसके आसपास से दो नदियां एक-दूसरे को क्रांस करती हैं। भूकंप जोन होने से भी ऐसे इलाकों में भू-धंसान की समस्या आती है। खुदाई करने वाले कई मजदूरों ने भी इस बात को रेखांकित किया एवं चेताया कि सुरंग से बार-बार धसकते मलबे की समस्या है, मगर उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। प्रश्न है कि कौन लोग इस उपेक्षा के लिये जिम्मेदार हैं। इसलिए यहां इन्फ्रास्ट्रक्चर को लेकर संवेदनशीलता की जरूरत है। खान या सुरंग में मजदूरों के फंसने की घटनाएं देश ही नहीं दुनियाभर में होती रहती हैं। कभी पहाड़ के धंसने से और कभी खदानों में पानी भरने से भीषण हादसे होते रहते हैं। जहां विकास की गंगा बहती है, वहां विनाश की संभावना से नकारा नहीं जा सकता। लेकिन हमें संभावित खतरों पर अधिक गंभीर होने की अपेक्षा है। मैदानी इलाकों में ही नहीं, उच्च हिमालयी क्षेत्र में भी सड़क, रेल और जलविद्युत परियोजनाओं तक के लिए सुरंगों का जाल बिछाया जा रहा है, क्योंकि सुरंगों को बहुत अच्छा विकल्प माना जाता है। क्या सुरंगें वाकई बेहतर विकल्प हैं? कैसे हो रहा है उनका निर्माण? इन प्रश्नों पर व्यापक मंथन की अपेक्षा है। ऐसा नहीं है कि भारत में ऐसी परियोजनाएं हर जगह ऐसी दुर्घटनाओं की शिकार हुई हैं। सिलक्यारा की घटना से एक तथ्य और सामने आया है कि ऐसे बचाव कार्य के लिए कोई पक्की योजना हमारे पास नहीं है। इसी वजह से विदेश से मदद लेनी पड़ी। अच्छा यही होगा कि इस घटना से सबक लेकर इस तरह के बचाव कार्य की पूछा प्रक्रिया और सामर्थ्य देश के पास हो ताकि आने वाले वक्त में इस तरह का बचाव कार्य जल्द से जल्द और बिना किसी बाधा के पूरा किया जा सके। इस हादसे से सबक लेते हुए आपदा प्रबंधन कार्यो को आधुनिक रूप देने के लिए हर संभव उपाय किए जाने चाहिए। विदेशों से हम तकनीक के मामले में मदद लेते रहते हैं।

तुम किस मिट्टी के बने हो



डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

एक पत्रकार ने नौकरी छोड़कर यूट्यूब चैनल शुरू कर दिया। तब एक यूजर ने पूछा, यदि पहले की तरह किसी ने इसे भी खरीद लिया तो कहीं जाओगे? पहले दिन उस पत्रकार ने पूरा मन लगाकर काम किया। तब एक यूजर ने फिर से पूछा, आज तुमने कितनी खर्चें दिखाई? पत्रकार ने कहा कि मैंने तो सिर्फ एक खबर ही दिखाई। यूजर चौंककर बोला, क्या सिर्फ एक ही खबर। आम तौर पर थोड़े चैनलों पर काम करने वाले हर थोकेने वाले पत्रकार दस से पंद्रह खबर तो छीक मारकर दिखा देते हैं। अच्छे ये बताओं तुमने कौनसी खबर दिखाई? एक खबर में सबकी कबर । पत्रकार बोला। क्या! लेकिन तुमने यह कैसे किया? आश्चर्यजनक रूप से यूजर ने पूछा। पत्रकार ने कहा, एक यूजर ने कमेंट बॉक्स में लिख डाला कि दम है तो अपनी खबर से मुझे कबर तक पहुंचाओ। मैंने सबसे पहले दो हजार रुपए की नोट ली। उसे ऊपर से नीचे की ओर फेंक दिया। मैंने कहा इसे कहते हैं रुपए का गिरना। वह काफी प्रभावित हुआ। फिर मैंने कहा कि इसे मैं कहीं से भी ढूँढ़ सकता हूँ। मैंने अपने फोन में वाईफाई ऑन कर दो हजार के नोट में छिपे चिप से लिंक किया। गुगल मैप की तर्ज पर मुझे दो हजार रुपए का पता मिल गया। यूजर का हाथ उड़ता जा रहा था। मैं यहीं तक नहीं रुका। फिर मैंने कहा कि यह नोट गुलाबी है। गुलाबी रंग से प्यार बढ़ता है। इसलिए इस नोट को अपने जेब में संभाले रखना। प्रेम खर्च करने से जीवन में शांति के साथ-साथ बची-खुची खुशी भी चली जाएगी। इतना कहते ही यूजर ने अपना पर्स टटोला। उसमें रखी दो हजार की नोट गायब थी। मैंने उसे डांडस बंधाते हुए कहा कि इसमें रोने जैसी कोई बात नहीं है। एक बार अपने फोन का मैसेज इन्बॉक्स देख लो। उसमें संदेश आया होगा कि फलों केर फंड में दो हजार जमा करने के लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद। आपकी दैर्घमर्ति वीरफाड़ हो चुकी है। यह पढ़कर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने अपने साथ-साथ एक लाख फोलोवर्स को मेरे यूट्यूब चैनल पर सब्सक्राइब करवाकर मेरा गुणगान कर रहा है। पहले यूजर ने कहा, वाह यह तो बड़े कमाल की बात है। लेकिन मुझे यह समझ नहीं आता कि बीस-पच्चीस ऐसे भी यूजर हैं जो बार-बार तुम्हारी हर प्रेजेंटेशन पर तापीयों के पुल बांधते नजर आते हैं। वैसे ये हैं कौन? तब पत्रकार ने कहा, ये बड़े-बड़े यूजर चैनलों के एंकर हैं, जो मेरा मसाला चुराकर अपने चैनलों पर लड़ने-झगड़ने की तत्कदा-भड़कावर रसियां बनाते हैं। अंदर की बात यह है कि बेवकूफ बनने वाले भी बेवकूफ बनाने का मसाला यहीं से ले जाते हैं।

चुनाव का बिगुल बज गया , शुरुआत अमित शाह ने बंगाल से कर दी



लेखक : अशोक भाटिया

पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों का परिणाम अभी आना बाकी है, लेकिन भाजपा ने 2024 की चुनावी जंग का बिगुल अभी से फूंक दिया है क्योंकि भाजपा हमेशा चुनावी मोड़ पर रहती है । इसी कड़ी में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बुधवार को कोलकाता पहुंचे। शाह ने कोलकाता के धर्मतला में एक रैली को संबोधित किया। उन्होंने पश्चिम बंगाल की ममता बनर्जी सरकार के खिलाफ राज्य की राजधानी में हुंकार भरी। भाजपा ने अमित शाह की रैली को ह्यप्रतिवाद सभाह्म का नाम दिया है और ह्मकोलकाता चलोह्म के नारे के साथ रैली का आयोजन किया ।रैली को संबोधित करते हुए अमित शाह ने कहा कि, 'हम 2024 में न केवल मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाएंगे बल्कि पश्चिम बंगाल में सरकार बनाएंगे'। बता दें कि बुधवार को अमित शाह कोलकाता रैली उसी मैदान में की, जहां सोहरावर्दी ने प्रत्यक्ष कार्यवाई दिवस कहा था। शाह ने कहा कि, यह मैदान मेरे लिए बहुत भाग्यशाली है।' बंगाल में अगली सरकार भाजपा की होगी। आपने 77 सीटें दी हैं और अभी-अभी दीदी ने सुबुंद अधिकारी को विधानसभा से निष्कासित किया है। सुनो दीदी आप सुबुंद को विधानसभा से तो निकाल सकती हैं लेकिन जनता के दिल से नहीं। शाह ने रैली में सवाल किया कि, बताओ क्या यहां भ्रष्टाचार रुक गया? मोदी जी बंगाल को करोड़ों का फंड भेजते हैं लेकिन टीएमसी वह पैसा ले लेती है। टीएमसी ने बंगाल को बर्बाद कर दिया

उन्होंने मुख्यमंत्री ममता को चुनौती देते हुए कहा कि, 'मैं ममता बनर्जी को चुनौती देता हूँकि वह अपने गिरफ्तार टीएमसी नेताओं और मंत्रियों को निर्लंबित करें। वह बेतहाशा दुर्गा नाम का जाप कर रही हैं ताकि उनके गिरफ्तार मंत्री/नेता उनके भतीजे के बारे में गलत बातें न फैला सके। ममता बनर्जी आप पूरी कोशिश कर लें, पिछला चुनाव आपने अवैध तरीके अपनाकर जीता था लेकिन 20२6 में हम राज्य में सरकार बनाएंगे। हम बंगाल को ही ऐसा कर सकती है।

है। बंगाल में राजनीतिक हिंसा सबसे ज्यादा है। घुसपैठ ही मुख्य मुद्दा है। ममता जो इसे रोक नहीं सकती। जो बंगाल कभी रवीन्द्र संगीत सुनता था, अब बम की आवाजें सुनता है। मैं गुजरात से हूँ लेकिन मेरे राज्य में किसी ने भी किसी नेता के पास भी किसी नेता के पास से नोटों के बंडल नहीं देखे। ममता बनर्जी अपने अन्य गठबंधन दल के साथ अयोग्यता में राम मंदिर पर आपत्ति जताती रहीं। मैं आपको आवश्यक करता हूँ कि सीएए देश लागू करेंगी। शाह ने आरोप लगाया कि ममता दीदी वोट के चक्कर में बांग्लादेश और म्यांमार से आ रहे घुसपैठियों के आधार कार्ड बनवा रही है और ये घुसपैठिए बंगाल के हिन्दुओं का हक मार रहे हैं, भाजपा ये नहीं चलने देगी। उन्होंने मुख्यमंत्री ममता को चुनौती देते हुए कहा कि, 'मैं ममता बनर्जी को चुनौती देता हूँ कि वह अपने गिरफ्तार टीएमसी नेताओं और मंत्रियों को निर्लंबित करें। वह बेतहाशा दुर्गा नाम का जाप कर रही हैं ताकि उनके गिरफ्तार मंत्री/नेता उनके भतीजे के बारे में गलत बातें न फैला सके। ममता बनर्जी आप पूरी कोशिश कर लें, पिछला चुनाव आपने अवैध तरीके अपनाकर जीता था लेकिन 202६ में हम राज्य में सरकार बनाएंगे। हम बंगाल को सोनार बांग्ला बनाएंगे और केवल भाजपा ही ऐसा कर सकती है। दरअसल, भाजपा की रणनीति स्पष्ट है। लोकसभा चुनाव के लिए पार्टी का ज्यादा फोकस पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश, पंजाब

और तमिलनाडु जैसे उन राज्यों में होगा, जहां भाजपा की स्थिति कमजोर है और जहां लोकसभा सीटें बढ़ने की संभावना है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने बंगाल में कुल 42 में से 18 सीटें जीती थी जबकि 2014 में भाजपा के पास सिर्फ दो सीटें थी। इसके बाद 2021 में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा को 77 सीटें मिलीं जबकि उससे 5 साल पहले बंगाल विधानसभा में भाजपा का एक भी विधायक नहीं था। अब भाजपा बंगाल में मुख्य विपक्षी दल है। बंगाल में लैफ्ट फ्रंट तकरीबन पूरी तरह खत्म हो गया है। कांग्रेस का अस्तित्व न के बराबर है। अब मुकाबला भाजपा और तुणमूल कांग्रेस के बीच है। इसीलिए भाजपा बंगाल में पूरी ताकत लगा रही है। बंगाल की तरह भाजपा की नजर तेलंगाना पर भी है। तेलंगाना में पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को कुल 119 में से सिर्फ एक सीट मिली थी लेकिन उसके बाद लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 17 में 4 सीटें जीतीं। भाजपा को तेलंगाना से भी उम्मीदें हैं। इसीलिए इस बार विधानसभा चुनाव में भी भाजपा ने तेलंगाना में काफी ताकत लगाई। अमित शाह की जब रैली हो रही थी उसके जवाब में ममता ने भी अपनी पार्टी के नेताओं के साथ केन्द्र सरकार के खिलाफ विधानसभा परिसर में धरना दिया। मोदी सरकार पर बंगाल के साथ भेदभाव का इल्जाम लगाया। कुल मिलाकर बुधवार को कोलकाता में अगले लोकसभा चुनाव

के कैपेन का टोन दिखाई दिया। कोलकाता में अमित शाह की रैली के लिए भाजपा ने काफी तैयारी की थी। ममता की सरकार इस रैली को रोकना चाहती थी। पहले प्रशासन ने रैली की अनुमति नहीं दी। भाजपा ने कलकता हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। हाईकोर्ट ने ममता सरकार की दलीलों को खारिज करके अमित शाह की रैली को हरी झंडी दी। इससे भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ गया। इसलिए अमित शाह की रैली में जबरदस्त भीड़ जुटी। पश्चिम बंगाल में, ममता के राज में, विरोधियों की रैली में इस तरह की भीड़ कम दिखती है। भीड़ को देखकर अमित शाह ने कहा कि पिछले विधानसभा चुनाव में ममता बनर्जी धांधली करके जीत गई, लेकिन अब ममता के जाने का वक्त आ गया है। अमित शाह ने कहा कि बंगाल में तुष्टिकरण की राजनीति अब खत्म होगी, हिन्दुओं का हक मारने वालों की विदाई होगी। अमित शाह ने ममता बनर्जी को भ्रष्टाचार, अपराध, चुनावी हिंसा, तुष्टिकरण और घुसपैठ के मुद्दों पर घेरा और इसके बाद सिटिजनशिप अमेंडमेंट एक्ट का मसला उठाया। अमित शाह ने कहा कि अब सीएए को लागू करने से कोई नहीं रोक सकता। शाह ने कहा कि घुसपैठ को रोकने के लिए सीएए जरूरी है। उन्होंने आरोप लगाया कि बंगाल में ममता ने घुसपैठियों को वोटर बनाने के अवैध सेंटर खोल दिए हैं। अमित शाह ने याद दिलाया कि ममता जब सत्ता में नहीं थीं

विश्व विकलांग दिवस पर विशेष

उनके लिए विकलांग शब्द की जगह दिव्यांग शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकलांगों को दिव्यांग कहने की अपील की थी । जिसके पीछे उनका तर्क था कि शरीर के किसी अंग से लाचार व्यक्तियों में ईश्वर प्रदत्त कुछ खास विशेषषताएं होती हैं। विकलांग शब्द उन्हे हतोत्साहित करता है। प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देश के लोगों ने विकलांगो को दिव्यांग तो कहना शुरू कर दिया लेकिन लोगों का उनके प्रति नजरिया आज भी नहीं बदल पाया है। आज भी समाज के लोगों द्वारा दिव्यांगों को दयनीय दृष्टि से ही देखा जाता है।

है। शारीरिक अभावों को यदि प्रेरणा बना लिया जाये तो दिव्यांगता व्यक्तित्व विकास में सहायक हो जाती है। यदि सोच सही रखी जाये तो अभाव भी विशेषता बन जाते हैं। दिव्यांगो का मजाक बनाना, उन्हें कमजोर समझना एक भूल और गैर जिम्मेदाराना व्यवहार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 दिसंबर 2015 को अपने रेडियो संबोधन मन की बात में कहा था कि शारीरिक रूप से अशक्त लोगों के पास एक दिव्य क्षमता है और उनके लिए विकलांग शब्द की जगह दिव्यांग शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकलांगों को दिव्यांग कहने की अपील की थी। जिसके पीछे उनका तर्क था कि शरीर के किसी अंग से लाचार व्यक्तियों में ईश्वर प्रदत्त कुछ खास विशेषषताएं होती हैं। विकलांग शब्द उन्हे हतोत्साहित करता है। प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देश के लोगों ने विकलांगो को दिव्यांग तो कहना शुरू कर दिया लेकिन लोगों का उनके प्रति नजरिया आज भी नहीं बदल पाया है। आज भी समाज के लोगों द्वारा दिव्यांगों को दयनीय दृष्टि से ही देखा जाता है। भले ही देश में अनेको दिव्यांगों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया हो मगर लोगों का उनके प्रति वही पुराना नजरिया बरकरार है। विकलांगों

के अधिकारों के लिए काम कर रहे संगठन नेशनल प्लेटफॉर्म फॉर द राइट्स ऑफ डिसएब्लिड ने प्रधानमंत्री मोदी के दिव्यांग शब्द पर उनको पत्र लिखकर कहा कि था कि केवल शब्द बदलने मात्र से ही विकलांगों के साथ होने वाले व्यवहार के तौर तरीके में कोई बदलाव नहीं आएगा। सबसे बड़ी जरूरत विकलांगों से जुड़े अपयश, भेदभाव और हाशिए पर डालने के मुद्दों पर ध्यान देने की है। ताकि वो देश की राजनीति के साथ साथ आर्थिक, सामाजिक विकास में बेहतर भागीदारी कर सके। दुनिया में बहुत से ऐसे दिव्यांग भी हुए हैं जिन्होंने अपने साहस संकल्प और उत्साह से विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम लिखवाया है। शक्तिशाली शासक तैमूर लंग हाथ और पैर से शक्तिहीन था। मेवाड़ के राणा सांगा तो बचपन में ही एक आंख गवाने तथा युद्ध में एक हाथ एक पैर तथा 80 घावों के बावजूद कई युद्धों में विजेता रहे थे। फिलिपी गीतकार कृष्ण चंद्र डे तथा संगीतकार रविंद्र जैन देख नहीं सकते थे। पूर्व क्रिकेटर अंजन भट्टाचार्य मूकबधिर थे। वर्ल्ड पैरा चैम्पियनशिप खेलों में झुंझू

शर्म ! तुम कहाँ हो

इसी शर्म विषय पर जानकारी लेने मैं गुरुवर श्री लज्जा प्रसाद शर्म आ (शर्मा) जी से मिला । वे बोले झ्र बड़े निर्लज्ज हो? यह भी कोई शोध का विषय है? माना तुम बुद्धिजीवी लगते हो लेकिन यह विषय हमें कुछ जंचता नहीं। मैंने कहा- किन्तु गुरुवर ! आप तो जानते ही हैं कि हम भारतीय आजकल लोककला और संस्कृति के प्रति कुछ अधिक ही सचेत व संवेदनशील हो गए हैं। यह तो आज जबकि हम अपनी सारी विकट समस्याओं के साथ इक्कीसवीं सदी में हैं, पता लगाना एक आवश्यकता बन गयी है कि यह शर्म अखिर कहाँ है

कभी ही नजरें झुकाता है किन्तु विवाहित पुरुष उधर बाँस से लेकर इधर बीबी तक अपनी अण्डे नीची फिर शर्मसार हो जाता है। जो तत्व पहले कन्याओं के पास था आज के रोबोट युग में खड़े प्रेमी या पति के पास स्थानांतरित होकर यौगिक बन गया अब इसे भौतिक विधियों द्वारा अलग करना असंभव हो गया है। इसी शर्म विषय पर जानकारी लेने मैं गुरुवर श्री लज्जा प्रसाद शर्म आ (शर्मा) जी से मिला। वे बोले झ्र बड़े निर्लज्ज हो? यह भी कोई शोध का विषय है? माना तुम बुद्धिजीवी लगते हो लेकिन यह विषय हमें कुछ जंचता नहीं। मैंने कहा- किन्तु गुरुवर ! आप तो जानते हैं कि हम भारतीय आजकल लोककला और संस्कृति के प्रति कुछ अधिक ही सचेत व संवेदनशील हो गए हैं। यह तो आज जबकि हम अपनी सारी विकट समस्याओं के साथ इक्कीसवीं सदी में हैं, पता लगाना एक आवश्यकता बन गयी है कि यह शर्म अखिर कहाँ है? मुझे आज्ञा दीजिये गुरुदेव एकलव्य से अंगुठा लेकर उसे धनुर्विद्या प्रवीणता पर अंगुठा दिखाने वाले द्रोण की

भाति मंदसित करते हुए उन्होंने कहा-जाओ। अर्जुन जैसे शिष्य! शर्म का पता लगाओ! पहले मुझे पुण्यवल्लीरियों से लिपटी शकुंतला (अभिज्ञान शकुंतलम् की नायिका) का स्मरण हो आया। सबसे पहले मैंने काव्य नायिका के घर को ढूढ़ना जरूरी समझा, क्योंकि शर्म अधिकतर काव्य में ही प्रयुक्त हुआ करता था, वह भी विशेषकर नायिका के संदर्भ में। एक स्थान पर लता लतिकाएं, पुष्पकलिकाओं युक्त सुंदर वाटिका सहित भवन दिखा रहे थे। आधुनिक भाषा में बंगला कहते हैं। मुझे लगा कालीदास की शकुंतला यहीं मिलेगी- मैं अनायास बढ़ा। बैठका (झाँगरूम) का दरवाजा खुला था। मैं द्वार पर खड़े रसोईघर (किचन) के दृश्य को अच्छी तरह देख सकता था क्योंकि वही दो प्राणी जो मानव यौनि में जन्मे थे ऑल चलचित्र का दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। एक षोडशी कन्या तीन इंच का घायरा (कस्ट का अनुवाद कुछ चुभता है, फिर भी बांह विहीन (स्लीवलेस का अनुवाद भी कितना कठोर है) चोली पहने, एक युवक जो कपड़ों और चेहरे से बावचीं जान पड़ता था,

से लिपटी अपने अधरों से चक्कर अधरों का मिलाप करने का प्रयास कर रही थी बेचारा रसोइया उस कामुक कामिनी की इस प्रक्रिया से आयकर छाणों से घबराने वाले आबकारी अधिकारियों की तरह घबरा रहा था। मुझे लगा भारत में साम्यवाद का आगमन हो गया है। मैंने खीस खंखार कर अपनी उपस्थिति का आभास कराया। झट से वह बावचीं रसोई में, और वह कन्या उसी शाकुंतलीय परिधान में मेरे समक्ष प्रगट हुई, कमर पर हाथ धरे, सीना ताने : जैसे किसी फिल्म में खलनायक को ललकारते नायक खड़ा होता है। लज्जा नम्रता तो दूर, भौंकने वाले अंदाज में पूछा-क्या है एक विषय पर खोज करने आया हूँ आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ। नहीं अपने पास फालतू बकवास सुनने, कहने का टाईम नहीं है। झफिर कुछ रुककर सोचती हुई कर्कशा ने कहा लाइन, वाइन का चक्कर तो नहीं हों और हरी। देखना तो यह आदमी मुझे लाईन मारने आया है और वह बावचीं सह प्रेमी हरी आता इससे पहले मैं मुहारापा लाइन मारना की भारतीयता पर लज्जाग्रस्त होता हुआ



